श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-नई दिल्ली (स्थापित सन् 1906)
का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सन् 1913 से निरंतर प्रकाशित होने वाला स्थानकवासी जैन परंपरा का प्राचीनतम् गौरवशाली समाचार पत्र

जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420 Mob.: 9019731906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : https://jainconference.org

सम्पादक : डॉ. अमित जैन
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

जुलाई - प्रथम, अंक - 17 विक्रम संवत् - 2083 वीर संवत् - 2552 ईस्वी सन् - 2026

Address
Here

चातुर्मास जीव के कल्याण के लिए हो

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

वर्ष 2026 का चातुर्मास प्रारंभ होने जा रहा है, हम सभी साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका वर्ग इस समय का पूर्ण उपयोग जीव के कल्याण के लिए करें। हम सभी ने अनंत की यात्रा में विभाव स्थिति में, शरीर, मन, बुद्धि, इन्द्रियों के वशीभूत होकर, अनंत कर्म का उपार्जन किया है। उन सभी कर्मों के कारण हम सभी ने चार गति, चौरासी लाख जीवायोनि में भ्रमण किया, उसका मूल कारण एक ही था, पुद्गल का चिन्तन। पर तत्व को मैं मानना, अपने को शरीर मानना, जिस काल में जो शरीर मिला उसी का ध्यान किया, भगवान ने उसे आर्त्त-रौद्र ध्यान कहा है। आज भी इस भव में पंचम आरे में जबसे ये जीव माँ के गर्भ में आया, तब से लेकर आज तक हमने किसका ध्यान किया, स्व-अवलोकन करें, जितना पर चिंतन हुआ वो सब विभाव था, जितनी साता की चाह रखी, उससे सुख गौण हो गया।

लक्ष्य - इस चातुर्मास में मुक्ति का लक्ष्य रखते हुए संसार का कोई लक्ष्य न रखें। इस चातुर्मास में हम सब कर्म क्षय करने के उद्देश्य से अपने स्वरूप को जानकर समझकर, उसमें अपने को स्थित करें। कर्म क्षय के उद्देश्य से पुद्गलातीत अवस्था में जीने का पुरुषार्थ करें। बस मुझे मुक्त होना है, मुझे मेरी चार गति की यात्रा का अंत करना है। मुझे स्वयं को सिद्धशिला पहुँचाना है। मुझे मेरे भीतर विद्यमान गुणों को प्रकटाना है।

एकत्व अनुप्रेक्षा - इस यात्रा में मैं अकेला हूँ। अकेले ही एक-एक समय का उपयोग कर मैं स्वयं को आगे बढ़ाऊंगा। हजारों लाखों के मध्य भी स्वयं को अकेला जानो, कितने ही आपको सम्मान देने वाले हों, आपके राग के बन्धन में बन्धे हों या आपके साथ किसी भी प्रकार के सम्बन्ध में बन्धे हों। उन सबके मध्य आप जीव अकेले हो। जीव को किसी की आवश्यकता नहीं है। जीव का कोई है नहीं, जीव किसी का नहीं। इस प्रकार एकत्व भावना व अन्यत्व भावना की अनुप्रेक्षा करते हुए धर्म ध्यान से शुक्ल ध्यान में प्रवेश होगा।

साधना - स्वयं को सबंधों से भिन्न, मन से भिन्न, मन के विचारों से भिन्न, इन्द्रियों के विषय भोगों से भिन्न जानो। केवल स्वयं को एक निराकार तत्व जानो। जीवात्मा जिसका किसी से कोई वास्ता नहीं। ऐसे आप आत्मा, स्वयं अपने स्वरूप में स्थित हो जाएं तो आपका जीवन सफल हो जाएगा। ऐसे शुक्ल ध्यान के प्रयोग अपनी व्यक्तिगत साधना के लिए करते रहें। मुक्ति के उद्देश्य से सतत् आत्म स्वरूप रमणता की साधना करें।

आपका चातुर्मास आध्यात्मिक हो, चतुर्विध संघ आत्म कल्याण के मार्ग पर तिन्नाणं, तारयाणं के सूत्र से अरिहंतों के मार्ग पर सतत् आगे बढ़े यही आत्मीय शुभ मंगल कामना।

अध्यक्षीय

सशक्त समाज का आधार : सहभागिता

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : ajvk1973@gmail.com

प्रिय बंधुओं, सादर जय जिनेन्द्र!

समाज की वास्तविक शक्ति केवल उसकी संख्या, संसाधनों अथवा संस्थागत संरचना में नहीं, बल्कि उसके सदस्यों की सक्रिय सहभागिता, पारस्परिक सहयोग एवं सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना में निहित होती है। जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को संगठन और समाज का अभिन्न अंग मानकर कार्य करता है, तभी एक सशक्त, संगठित और प्रगतिशील समाज का निर्माण संभव हो पाता है।

हमारा जैन समाज सदैव सेवा, समर्पण, सहयोग और सहभागिता की गौरवशाली परंपरा का वाहक रहा है। हमारे पूर्वजों ने त्याग, तप, दान और संगठन की भावना के माध्यम से समाज को एक सुदृढ़ आधार प्रदान किया। आज आवश्यकता है कि हम उन्हीं आदर्शों को वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप आत्मसात करें।

वर्तमान समय में सामाजिक, पारिवारिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर अनेक परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं। जीवन की व्यस्तता, व्यक्तिगत प्राथमिकताओं और बदलती जीवनशैली के कारण सामाजिक सहभागिता का दायरा कहीं-कहीं सीमित होता दिखाई देता है। ऐसे समय में समाज के प्रत्येक वर्ग-युवा, महिला, वरिष्ठजन, व्यवसायी, शिक्षाविद् एवं समाजसेवी की सक्रिय भागीदारी अत्यंत आवश्यक हो जाती है।

संगठन तभी जीवंत रहता है जब उसमें संवाद, सहयोग और सहभागिता का वातावरण बना रहे। समाज के प्रत्येक व्यक्ति के विचार, सुझाव और योगदान का सम्मान किया जाए तथा सभी को साथ लेकर चलने की भावना विकसित हो। जब समाज का प्रत्येक सदस्य स्वयं को उत्तरदायी मानता है, तभी संगठन नई ऊँचाइयों को प्राप्त करता है।

विशेष रूप से युवा पीढ़ी को सामाजिक एवं संगठनात्मक गतिविधियों से जोड़ना समय की आवश्यकता है। युवाओं की ऊर्जा, महिलाओं की संवेदनशीलता और वरिष्ठजनों के अनुभव का समन्वय किसी भी समाज को नई दिशा प्रदान कर सकता है। हमें ऐसी कार्य संस्कृति विकसित करनी होगी, जिसमें सभी वर्गों को सम्मानपूर्वक सहभागिता का अवसर प्राप्त हो। जैन दर्शन भी हमें परस्पर सहयोग, अहिंसा, अनेकांत और समरसता का संदेश देता है। यदि हम इन मूल्यों को अपने व्यवहार और सामाजिक जीवन में उतारें, तो समाज में एकता, विश्वास और आत्मीयता का वातावरण और अधिक सुदृढ़ होगा।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम केवल दर्शक न बनें, बल्कि समाज निर्माण के सक्रिय सहभागी बनें। सेवा कार्यों, धार्मिक गतिविधियों, सामाजिक अभियानों, युवा एवं महिला कार्यक्रमों तथा संगठनात्मक प्रयासों में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें। हमारा छोटा-सा योगदान भी समाज की बड़ी शक्ति बन सकता है। आपका सहयोग, आपकी सहभागिता और आपका विश्वास ही समाज की सबसे बड़ी शक्ति है।

सम्पादकीय

एक ओर अन्न की बर्बादी, दूसरी ओर दाने-दाने को मोहताज मानवता

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

"अन्नं ब्रह्म"-भारतीय संस्कृति का यह उद्घोष केवल एक धार्मिक वाक्य नहीं, बल्कि जीवन का शाश्वत दर्शन है। हमारे ऋषियों ने अन्न को देवतुल्य माना, क्योंकि वे जानते थे कि अन्न केवल शरीर का पोषण नहीं करता, बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि के जीवन का आधार है। यही कारण था कि भारत में भोजन ग्रहण करना भी एक संस्कार माना गया। भोजन से पहले ईश्वर का स्मरण, अन्न के प्रति कृतज्ञता और आवश्यकता भर ही भोजन ग्रहण करना हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग था।

किन्तु आज का दृश्य अत्यन्त पीड़ादायक है। एक ओर प्रतिदिन हजारों टन भोजन कूड़ेदानों में फेंक दिया जाता है, वहीं दूसरी ओर लाखों लोग एक समय के भोजन के लिए संघर्ष कर रहे हैं। अनेक बच्चे भूखे पेट सो जाते हैं, असंख्य परिवार दाने-दाने को मोहताज हैं, जबकि सम्पन्न समाज के उत्सवों और आयोजनों में अन्न की बर्बादी एक सामान्य बात बन गई है। यह केवल आर्थिक असमानता नहीं, बल्कि हमारी संवेदनाओं के क्षय का भी प्रमाण है।

कुछ दशक पहले तक भारतीय परिवारों में भोजन केवल पेट भरने की प्रक्रिया नहीं था, बल्कि वह संस्कारों का विद्यालय था। भोजन से पूर्व हाथ-पाँव धोना, ईश्वर का स्मरण करना, थाली में पहले थोड़ा-थोड़ा परोसना, गौ, पक्षियों, श्वान तथा अन्य जीवों के लिए ग्रास निकालना और फिर शांत चित्त से भोजन करना-ये सब जीवन-मूल्यों का हिस्सा थे। बच्चों को बचपन से सिखाया जाता था कि थाली में अन्न का एक भी कण व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। कई परिवारों में भोजन के बाद थाली को जल से धोकर वह जल भी पी लिया जाता था, ताकि अन्न का एक कण भी नष्ट न हो। यह केवल मितव्ययिता नहीं थी, बल्कि अन्न के प्रति श्रद्धा और किसान के श्रम के प्रति कृतज्ञता का भाव था।

आज परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं। आधुनिक जीवनशैली और उपभोगवादी संस्कृति ने भोजन को आवश्यकता से अधिक प्रदर्शन का माध्यम बना दिया है। अनेक घरों में प्रतिदिन बचा हुआ भोजन बिना किसी अपराधबोध के कूड़ेदान में डाल दिया जाता है। यह देखकर सबसे अधिक पीड़ा इस बात की होती है कि अन्न फेंकते समय हमारे हाथ भी नहीं काँपते और मन विचलित भी नहीं होता।

होटलों और रेस्तराँ की स्थिति भी कम चिंताजनक नहीं है। अधिकांश स्थानों पर आधी मात्रा में भोजन उपलब्ध नहीं होता। अकेले व्यक्ति को आवश्यकता से कहीं अधिक भोजन लेना पड़ता है। यदि ग्राहक कहे कि "मूल्य पूरा ले लीजिए, (शेष पृष्ठ 5 में)

श्री मरूधर केसरी गुरूभ्यो नमः
देवानुप्रिय सेठ सा श्री माणकचंद सा श्रीमती रूप लता जी बोहरा की पावन स्मृति में
नरेश - बबिता, हर्ष - साधना, सौ. कां. करिश्मा, थिया बोहरा जैन - मुम्बई - जोधपुर
HaloVerse Entertainment Pvt Limited. Mumbai
Jupiter City Developers India Pvt. Ltd. Mumbai
XL Energy Ltd.
नरेश बोहरा जैन
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन - जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
कार्याध्यक्ष - पावन धाम, जैतारण, राजस्थान
7666540600 Jainn07@gmail.com

जय गुरू रूप

जय गुरू मरूधर केसरी

जय गुरू सुकन

कोटिशः वंदन नमन

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद	98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली	93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	98930 32777
श्री पारस मोदी जैन, मुंबई	98200 60530

राष्ट्रीय पर्यवेक्षण समिति

राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली	98100 45440
राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	98111 97000

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री महावीर रांका जैन, पोलुर	94442 04046
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर सिटी	98151 84811
श्री संजय जैन, दिल्ली	98111 67770
श्री डिपिन नेमनाथ जैन, इन्दौर	78699 99222
श्री विजयकांत कोठारी जैन, पुणे	98230 82152

राष्ट्रीय समन्वय समिति

श्री प्रशांत जैन, 'गांधरा' दिल्ली (मुख्य समन्वयक)	98101 21450
श्री सुरेशकुमार लुणावत जैन, चेन्नई (ज़ोन - 1)	98842 21003
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना (ज़ोन - 2)	98150 20661
श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा (ज़ोन - 3)	94141 13056
श्री ईश्वर बाबूसेठ बोरा जैन, अहिल्यानगर (ज़ोन - 4)	98237 99998
श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत (ज़ोन - 5)	98251 35744

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	98681 25710

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर	93412 32573
श्री पुखराज मेहता जैन, बैंगलोर	98446 77725
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद	92463 61008
श्री दिनेश कुमार भलगट जैन, चेन्नई	98402 64888
श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री विमलचंद जैन, अम्बाला	94667 01008
श्री पुष्कर जैन, मेरठ	94122 06374
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली	98113 58110
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	99113 00888
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	98106 72111
श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली	93509 16150
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन, उदयपुर	95117 05291
श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर	77738 66000
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	94222 46500
श्री सतीश बाबूसेठ लोढ़ा जैन, अहिल्यानगर	94222 22138
श्री सुनील मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 63100
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	94205 85878
श्री कीर्ति दुग्गड़ जैन, पुणे	98220 34344
श्री शंभुलाल ललवानी जैन, अहमदाबाद	99783 47800

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

श्री एस. के. जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98102 78217

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
राष्ट्रीय मंत्री : श्री अशोककुमार धोका जैन, बैंगलोर	98440 58123

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री प्रकाश भटेवरा जैन, इन्दौर	98270 31032
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मनीष बाफना जैन, सूरत	93749 86671
राष्ट्रीय मंत्री : श्री जितेन्द्र चोपड़ा जैन, इन्दौर	93021 27805

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु	94224 59362
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोशनलाल वड़ाला जैन 'सी.ए.', नवी मुंबई	98200 72121

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	95400 02778
चेयरमैन : श्री सुरेश जैन, दिल्ली	98112 39872
वाईस चेयरमैन : श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री सुरेशचंद जैन, दिल्ली	98117 48722
राष्ट्रीय मंत्री : श्री नरेन्द्र जैन, दिल्ली	98101 63165

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर	99455 41200
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर	93425 97955

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री शैलेष शोभाचंद संचेती जैन, वैजापुर	94214 18121

जैन कॉन्फ्रेंस आत्म-ध्यान योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री शशिकांत 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोहित छाजेड़ जैन, छत्रपति संभाजीनगर	94207 64456

हर प्रांत जैन भवन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक कुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	94220 36831
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विनय कुमार नाहटा जैन, दिल्ली	98110 12512
राष्ट्रीय मंत्री : श्री प्रफुल्ल कोठारी जैन, पुणे	90110 17777

राष्ट्रीय जन कल्याण योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : सतिन्दर वीर जैन	98110 70722
राष्ट्रीय चेयरमैन : सुदर्शन जैन	93108 99904
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : संजय जैन	98187 25000
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : नंदीवर्धन जैन	98110 39625
राष्ट्रीय मंत्री : कनिका संदीप जैन	96549 73690

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94229 44800
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री तनसुख झामड़ जैन, छत्रपति संभाजीनगर	98226 59910
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मुकेश जैन 'सांड़', मोहाली	93185 93599

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय डिजिटाईजेशन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री सुभाष जैन 'लिली', गिदड़बाहा	98146 99393
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री राजीव सुनील सांखला जैन, बैंगलोर	98445 46014
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री संजय जैन 'चिली', दिल्ली	93501 32274
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री राकेश जैन, दिल्ली	98101 93101
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनधीर जैन, लुधियाना	98141 05020

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय मीडिया संचार योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय जैन, दिल्ली	93191 87434
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अजय जैन ' प्रथम', दिल्ली	97117 74004
राष्ट्रीय मंत्री : लक्ष्मीलाल वीरवाल जैन	94604 45060

राष्ट्रीय युवा शाखा

अध्यक्ष : श्री विपुल जैन, दिल्ली	87662 14456
चेयरमैन : श्री अंकुर जैन, दिल्ली	98711 98111
कार्याध्यक्ष : श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद	93767 37111
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मंजीत शांतिलाल कोठारी जैन, सूरत	93745 44138
महामंत्री : श्री अमित कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	91522 11555
कोषाध्यक्ष : श्री मुनीष पकंज जैन, दिल्ली	99998 38345

राष्ट्रीय महिला शाखा

अध्यक्षा : श्रीमती संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
चेयरमैन : श्रीमती अनामिका कुलदीप तलेसरा, सूरत	94278 08401
वाईस चेयरमैन : श्रीमती मीनाक्षी विनय जैन, दिल्ली	98187 44166
वरिष्ठ उपाध्यक्षा : श्रीमती कुसुम महावीरप्रसाद जैन, सोनीपत	92515 74016
महामंत्री : श्रीमती रीचा संदीप जैन, लुधियाना	79737 96548
कोषाध्यक्षा : श्रीमती उर्मिल नरेश जैन, दिल्ली	92504 18306

प्रांतीय अध्यक्ष

श्री प्रकाश बुरड़ जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98456 71449
श्री विनोद कुमार कीमती जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98490 11350
श्री बी. धर्मीचन्द जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	94444 31536
श्री अनिल जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98141 40491
डॉ. श्री रामनिवास जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	92541 19621
श्री कीमतीलाल जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	97203 57112
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री आनंद चपलोत जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94609 66507
श्री हुलास बेताला जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	96696 97797
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मोहनलाल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	94222 50478
श्री नितिन बेदमुथा जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	93710 75787
श्री सम्पत खाबिया जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98250 47321

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर	93412 21774
श्री सम्पतराज कोठारी जैन, सिकन्दराबाद	92461 58452
श्री सुरेश गादिया जैन, चेन्नई	98402 00916
श्री राजेन्द्र बोहरा जैन, चेन्नई	98406 00003
श्री अरूण कुमार जैन, लुधियाना	98155 66885
श्री रवीन्द्र जैन, पानीपत	98960 92861
श्री नितिन जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री नरेश जैन 'रिंढ़ाना', दिल्ली	98100 66701
श्री दिलीप रूणवाल जैन, दिल्ली	98112 05545
श्री दिनेश एम. सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री नरेश लोढ़ा जैन, उदयपुर	93222 56788
डॉ. सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इन्दौर	99818 50900
श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन, इन्दौर	94250 62147
श्री मीठालाल कांकरिया जैन, छत्रपति संभाजीनगर	98226 71574
श्री वसंत लोढ़ा जैन, अहिल्यानगर	94212 05000
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुलिया	94231 93447
श्री कैलाश प्रकाश बाफना जैन, छत्रपति संभाजीनगर	93726 66999
श्री सुरेश सिंघवी जैन, मुंबई	98212 87789
श्री विलास राठौड़ जैन, पुणे	98901 74007
श्री आकाश मादरेचा जैन, सूरत	94287 45537

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

श्री दीपक जैन, दिल्ली	93508 70065
श्री संजय जैन 'निशा', लुधियाना	94172 53101
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन, पुणे	93710 89896
श्री संदीप जैन 'सन्नी', जम्मू	94191 90527
श्री महेन्द्र जैन, सवाई माधोपुर	94626 72015

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

श्री जयप्रकाश ललवानी जैन, चेन्नई	99412 45660
श्री संजीव जैन 'आनंदम्', दिल्ली	93122 40901
श्री नितिन चोपड़ा जैन, पुणे	98224 07446
श्री प्रकाश कोठारी जैन, खार, मुंबई	98200 83919
श्री त्रिलोक जैन, दिल्ली	98681 06607

प्रांतीय महामंत्री

श्री नेमीचंद दलाल जैन (कर्नाटक)	99649 72251
श्री किशोर कुमार मुथा जैन (तेलंगाना)	92473 99003
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री संजय जैन (हरियाणा)	98130 50937
श्री अनुराग जैन (उत्तर प्रदेश)	98371 09567
श्री ललित ओसवाल जैन (दिल्ली)	98111 38968
श्री लोकेश धाकड़ जैन (राजस्थान)	98280 50143
श्री पीयूष जैन (मध्य प्रदेश)	94254 00121
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री शांतिलाल इंदरचंद दुग्गड़ जैन (महाराष्ट्र)	98220 79225
श्री गणेश ओसवाल जैन (मुंबई-पुणे)	99218 79613
श्री विनोद कुमार धोका जैन (गुजरात)	94279 30764

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार समिति

एडवोकेट श्री नरेश कुमार जैन, रानियां	90504 00009
एडवोकेट श्री सुनील जैन, चण्डीगढ़	98141 90422
एडवोकेट श्री नवीन जैन, पानीपत	90347 19097

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार समिति

सदस्य : श्री संजय ताराचंद कोटेचा जैन, जलगांव	99237 11711
सदस्य : श्री संजय बोहरा जैन, मुंबई	98339 57170
सदस्य : श्री अतुल चोरड़िया जैन, वाघोली, पुणे	80876 35657
सदस्य : श्री रवि जैन, दिल्ली	99996 10010
सदस्य : श्री रमेश कुमार जैन, 'शास्त्री' जीन्द	92554 30824

वरिष्ठ मार्गदर्शक

श्री प्रेमचंद जैन, गुरुग्राम (हरियाणा)	92113 08367
श्री जसवंत दलाल जैन, बैंगलोर (कर्नाटक)	98863 88021
श्री शांतिलाल पोखरणा, बैंगलोर (कर्नाटक)	98451 55799
श्री महावीरचंद भण्डारी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	98401 96758
श्री विमल धारीवाल जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94433 32330
श्री पदमचंद बागमार जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94440 77990
श्री अरिदमन जैन, लुधियाना (पंजाब)	95012 33866
श्री जतिन्द्र जैन, लुधियाना (पंजाब)	98559 39174
श्री विश्वा जैन, लुधियाना (पंजाब)	98140 88391
श्री राजेश जैन, लुधियाना (पंजाब)	98761 71831
श्री अजय जैन, पानीपत (हरियाणा)	94161 22219
श्री जगदीशचन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	98962 00081
श्री जगदीश जैन, रोहतक (हरियाणा)	93556 71998
श्री राजिन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	99963 33388
श्री राजीव जैन, पानीपत (हरियाणा)	98122 00002
श्री राहुल जैन, करनाल (हरियाणा)	99927 33822
श्री संदीप जैन, सिरसा (हरियाणा)	92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुज़फ्फरनगर (उत्तद प्रदेश)	98370 67082
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)	98100 78214
श्री पारस जैन, मेरठ (उत्तर प्रदेश)	99270 62009
श्री जयप्रकाश जैन, बड़ौत (उत्तर प्रदेश)	99974 55741
श्री अनिल जैन 'बखेता', रोहिणी, दिल्ली	93124 33320
श्री राजकुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98112 52316
श्री विजय जैन, रोहिणी, दिल्ली	99994 73873
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98371 74345
श्री देवेन्द्र जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99716 65599
श्री सत्यनारायण जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	92158 99904
श्री प्रदीप जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99999 97513
श्री रोशनलाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98100 50467
श्री सतपाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98102 64999
श्री अशोक जैन 'जयचंदा' ऋषभ विहार, दिल्ली	93109 89999
श्री भूपेन्द्र जैन, अशोक विहार, दिल्ली	98110 16545
श्री लवकुमार जैन, वीरनगर, दिल्ली	88266 72626
श्री नरेश जैन, पंजाबी बाग, दिल्ली	98111 30285
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, शक्तिनगर, दिल्ली	98100 21710
श्री राजकुमार जैन, शास्त्रीनगर, दिल्ली	98114 04140
श्री मदनलाल जैन 'शामडी', प्रशांत विहार, दिल्ली	98737 76896
श्री पंकज जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	88600 98595
श्री संजय जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98187 25000
श्री चक्रेश जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98112 33462
श्री बजरंगलाल जैन, दिल्ली	93122 62192
श्री अशोक पालरेचा जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94601 71190
श्री ज्ञानचंद विनायकिया जैन, ब्यावर (राजस्थान)	98140 10385
श्री महावीर कुमार बाफना जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94147 38976
श्री गौतम संचेती जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94142 58370
श्री मांगीलाल लोढ़ा जैन, उदयपुर (राजस्थान)	88753 26779
श्री शंकरलाल डांगी जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94628 83336
श्री दिनेशचन्द्र चोरड़िया जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94141 66639
श्री सिद्धराज सिंघवी जैन, निम्बाहेड़ा (राजस्थान)	98298 86701
श्री भूपेन्द्र सिंह पगारिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94146 17494
श्री पकंज कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 11902
श्री मीठालाल सिंघवी जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 12134
श्री दीपक कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	98293 47007
श्री राजेन्द्र गोखरू जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 84005
श्री मनमोहन गांधी जैन, पाली (राजस्थान)	94143 26293
श्री अम्बालाल लोढ़ा जैन, राजसमन्द (राजस्थान)	98290 40800
श्री अभय पोखरणा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98930 33345
श्री अचल चौधरी जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98260 20161
श्री अनिल बरड़िया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	93021 22995
श्री हेमंत बोहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94074 13922
श्री राजकुमार जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94253 19691
श्री सुरेश देशलहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98270 31960
श्री सुभाष विनायकिया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	96302 55540
श्री चन्द्रप्रकाश चोरड़िया जैन, उज्जैन (मध्य प्रदेश)	73662 31275
श्री इन्द्रमल पटवा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 28737
श्री महेन्द्र बोथरा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98270 06500
श्री सुजानमल कोटेचा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 08682
श्री रवि सुराणा जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94251 01014
श्री यशवंत सिंह बाफना जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94254 87623
श्री शांतिलाल चोरड़िया जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	98909 52621
श्री संतोष मंडलेचा जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	99234 78889
श्री शोभाचंद संचेती जैन, छत्रपति संभाजीनगर (महाराष्ट्र)	94051 07851
श्री हसमुख बंबकी जैन, रत्नागिरी (महाराष्ट्र)	94224 29611
श्री जीवनराज पुनमिलया जैन, इचलकरंजी (महाराष्ट्र)	92258 31765
श्री हीरालाल पगारिया जैन, अहिल्यानगर (महाराष्ट्र)	
श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98201 11839
श्री महावीरचंद तातेड़, मुंबई (महाराष्ट्र)	98699 09374
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	
श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98212 20220
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	87882 35525
श्री पोपटलाल ओस्तवाल जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	98230 81825
श्री सुभाष सुराणा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	97662 90002
श्री ओमप्रकाश मांडोत जैन, अंकलेशवर (गुजरात)	99250 20407
श्री प्यारचंद कोठारी जैन, सूरत (गुजरात)	93745 35686
श्री विनोद कुमार सूर्या जैन, खेड़ब्रह्मा (गुजरात)	93277 57610
श्री हीरालाल खाबिया जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	94270 31776
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री जयंतिलाल कोठारी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा

बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड
प्रेस्टीज फीड मिल्स
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड
प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूटस
स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप
30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.
Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

कथा-कहानी | योगिराज की कहानियाँ-प्रवर्तक पू. श्री सुभद्र मुनि

नुकसान से बचो !

हजरत मूसा एक जमात में बैठे थे। कुछ नेकदिली की बातें लोगों को बता रहे थे। तभी एक चिड़िया फुदकती हुई उनके करीब आई। टी-टी-बी-टू-टुट-टुट बोली। मूसा ने धीरे से ऐसी जुबान में जवाब दिया कि तनिक भी देर न लगी चिड़िया उड़ गई।

एक अमीर बारीकी से यह सब देख रहा था। वह मूसा के करीब गया और कहा-मुझे परिन्दों की जबान सिखा दें। मूसा ने कहा, क्या होगा परिंदों की जबान सीखकर? इन्सानी फर्ज की बातें सीखो और जिन्दगी में नेक काम करो।

अमीर अपनी जिद पर अड़ गया। छह महीने गुजार कर वह मेहनत से पक्षियों की जबान समझना-बोलना सीख गया। जब पूरी जबान सीख चुका तो बहुत खुश हुआ। मूसा से कहा-बस मेरी मुराद पूरी हो गई। अब मैं घर जा रहा हूँ।

घर आया वह। घर पर उसने मुर्गा-मुर्गी पाले हुए थे। वे कुछ भी आपस में बात करते अमीर समझ लेता। मुर्गा-मुर्गी चिंता में पड़ गये कि इंसान जात हमारी बोली भी समझने लगा।

एक दिन मुर्गी ने मुर्गे से कहा-जनाब साहब, कल क्या होगा, तुम्हें मालूम है? हमारे मालिक जो हमें दाना खिलाते हैं, कल उनके घर का ऊँट मर जाएगा।

अमीर ने सुन ली मुर्गी की बात। मुर्गे का जवाब सुनने की अब उसमें गुंजाइश कहाँ रह गई। वह तुरंत बाजार गया और ऊँट को बेच आया। अगले दिन मालिक ने देखा कल बेचा गया ऊँट आज सचमुच मर गया है।

कुछ दिन गुजरे। मुर्गी बोली मुर्गे से-जनाब हमारे मालिक का घोड़ा कल मर जाएगा। आपको कोई अफसोस न होगा?

मालिक ने सुना और घोड़ा भी बेच दिया। घोड़ा भी अगले दिन मर गया। मालिक की खुशी का पार न रहा। वह सोचने लगा-छह महीने मूसा के साथ गुजारे जरूर, मगर फायदा भी बे-हिसाब हो रहा है। ऊँट और घोड़ा अगर मेरे खूँटे पर मर जाते तो मेरा कितना नुकसान होता। परिन्दों की बोली सीख ली तो कितना फायदा उठाया है मैंने।

एक दिन प्रातः मुर्गी ने मुर्गे से कहा-जनाब आप अब तक सो रहे हैं। उठेंगे नहीं। हैरत की बात है कल तो हमारा मालिक ही मर जाएगा। हमें दाने कौन खिलाएगा?

अमीर ने जब अपने मरने की बात मुर्गी से सुनी तो जनाब के पैरों तले से जमीन खिसकने लगी।

वह सिर पर पैर रख भागा-भागा हजरत मूसा के पास गया। बोला-मुझे बचा लो। मैं मरा। मूसा ने कहा क्या बात है? बात बताओ।

उसने मुर्गी की कही बात बता दी।

हजरत बोले-जाओ, अपने को भी बाजार में क्यों नहीं बेच आते। नुकसान से बच जाओगे।

इन्सानी फर्ज को तुमने बेकार का काम माना और परिन्दों की जबान सीख ली। क्या मिला तुम्हें? इन्सानी धर्म पहली जबान होनी चाहिए आदमी की। मूसा ने उसे कहा-दौलत को जमा करके तुम नुकसान से कभी नहीं बच सकते! दीन को समझ कर इबादत करने वाला ही जिन्दगी के होने वाले नुकसान से बच सकता है।

स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की अतीतकालीन महान साधु परम्परा के मूर्धन्य व्यक्तित्व श्रृंखला...

चारों हाथ-पैरों से एक साथ लेखन करने वाले विलक्षण प्रतिभा के धनी : अमरगच्छ के यशस्वी आचार्य श्री जीतमलजी महाराज

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

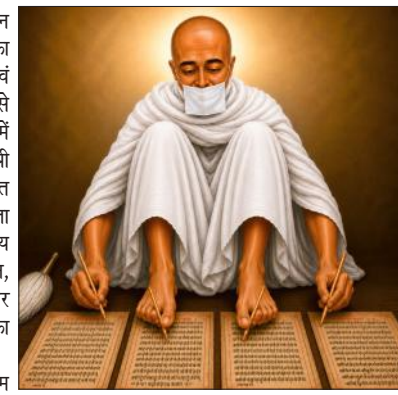

राजस्थान की स्थानकवासी जैन श्रमण परम्परा में अमरगच्छ का इतिहास अनेक तेजस्वी, तपस्वी एवं विद्वान आचार्यों की साधना से आलोकित रहा है। इन्हीं महापुरुषों में आचार्य सम्राट 1008 पूज्य श्री जीतमलजी महाराज का नाम अत्यंत श्रद्धा और गौरव के साथ लिया जाता है। वे अपने समय के ऐसे अद्वितीय संत थे, जिनमें तप, त्याग, ज्ञान, साहित्य - साधना, धर्मप्रभावना और आश्चर्यजनक बौद्धिक क्षमता का अनुपम समन्वय देखने को मिलता है।

3 नवम्बर 1769 ईस्वी (विक्रम संवत् 1826) को राजस्थान के रामपुरा में एक धार्मिक एवं संस्कारवान जैन परिवार में उनका जन्म हुआ। बाल्यकाल से ही उनमें वैराग्य, अध्ययनशीलता, तीव्र स्मरणशक्ति तथा आध्यात्मिक चिंतन के संस्कार स्पष्ट दिखाई देने लगे थे। धार्मिक वातावरण में पले-बढ़े बालक जीतमल ने अल्पायु में ही सांसारिक जीवन की क्षणभंगुरता का अनुभव कर आत्मकल्याण के मार्ग को अपना जीवन-लक्ष्य बना लिया।

सन् 1777 ईस्वी में उदयपुर में उन्होंने स्थानकवासी जैन श्रमण परम्परा में दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के पश्चात् उन्होंने अपने गुरुजनों के सान्निध्य में आगम, दर्शन, न्याय, व्याकरण, छन्द, संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी तथा राजस्थानी साहित्य का गंभीर अध्ययन किया। उनकी असाधारण प्रतिभा और अध्ययनशीलता ने शीघ्र ही उन्हें अपने समय के अग्रणी विद्वानों की श्रेणी में प्रतिष्ठित कर दिया।

आचार्यश्री का सर्वाधिक चर्चित और विश्वविख्यात पक्ष उनकी अद्भुत लेखन-कला थी। वे अपने दोनों हाथों और दोनों पैरों से एक ही समय में अलग-अलग विषयों पर स्वतंत्र रूप से लेखन करने में समर्थ थे। यह केवल अभ्यास या शारीरिक दक्षता का परिणाम नहीं था, बल्कि असाधारण मानसिक एकाग्रता, स्मरणशक्ति, साधना और मस्तिष्कीय समन्वय का अप्रतिम उदाहरण था। मानवीय इतिहास में ऐसे उदाहरण अत्यंत विरल हैं। स्थानकवासी जैन परम्परा में तो यह क्षमता उन्हें सर्वथा अद्वितीय बनाती है। यदि आधुनिक मनोविज्ञान, तंत्रिका-विज्ञान और भारतीय ज्ञान-परम्परा के विद्वान इस विलक्षण क्षमता पर गंभीर शोध करें, तो यह भारतीय साधना-विज्ञान की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध हो सकती है।

आचार्यश्री एक उत्कृष्ट कवि, प्रखर साहित्यकार और प्रभावशाली धर्मोपदेशक भी थे। उन्होंने धर्म, दर्शन, नीति, भक्ति तथा काव्य विषयों पर अनेक ग्रन्थों की रचना कर अमरगच्छ की साहित्यिक परम्परा को समृद्ध किया। उनकी प्रमुख रचनाओं में 'आगम बत्तीसी', 'शीलचन्द्रिका चौपाई', 'कीर्तिसंग्राम' आदि का उल्लेख मिलता है। उनकी भाषा में आगमिक गंभीरता, काव्यात्मक माधुर्य और लोकभाषा की सहजता का अद्भुत समन्वय है। उनके साहित्य ने न केवल धार्मिक चेतना को जागृत किया, बल्कि नैतिक जीवन और आत्मसंयम के आदर्शों को भी समाज में प्रतिष्ठित किया।

धर्मप्रभावना के क्षेत्र में आचार्यश्री ने राजस्थान सहित अनेक प्रदेशों में व्यापक विहार कर जैन धर्म के मूल सिद्धान्त-अहिंसा, अनेकान्त, अपरिग्रह, संयम और सदाचार-का प्रभावी प्रचार किया। उनके प्रवचन तर्क, आगमिक प्रमाण और व्यवहारिक जीवन-दर्शन से परिपूर्ण होते थे, जिससे विद्वान और सामान्य श्रावक दोनों समान रूप से प्रभावित होते थे। वे केवल उपदेशक नहीं, बल्कि समाज में नैतिक चेतना और आध्यात्मिक जागरण के प्रेरणास्रोत थे।

उनका सम्पूर्ण जीवन सादगी, अनुशासन, स्वाध्याय और तप का पर्याय रहा। विद्वत्ता के शिखर पर पहुँचने के बाद भी उनमें विनम्रता और आत्मसंयम का अद्भुत समन्वय बना रहा। वे जीवन के अंतिम क्षणों तक लेखन, अध्ययन, स्वाध्याय और धर्मप्रभावना में निरंतर सक्रिय रहे।

26 मई 1855 ईस्वी (विक्रम संवत् 1912) को जोधपुर (राजस्थान) में उनका महाप्रयाण हुआ। उनका देहावसान स्थानकवासी जैन परम्परा के लिए एक युगांतकारी क्षति थी, किन्तु उनका साहित्य, उनका तप, उनकी विद्वत्ता और उनकी विलक्षण लेखन-कला आज भी जैन समाज की अमूल्य धरोहर के रूप में जीवित है।

आचार्य सम्राट श्री जीतमलजी महाराज का जीवन इस सत्य का प्रमाण है कि जब साधना, ज्ञान और सृजनशीलता एक ही व्यक्तित्व में समाहित हो जाती हैं, तब इतिहास एक महापुरुष को जन्म देता है। अमरगच्छ की यह तेजस्वी विभूति केवल स्थानकवासी जैन समाज की ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारतीय संत-परम्परा की गौरवशाली धरोहर है। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर गंभीर अकादमिक शोध समय की आवश्यकता है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इस विलक्षण आचार्य की अनुपम साधना, साहित्य और अद्भुत प्रतिभा से प्रेरणा प्राप्त कर सकें।

(श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय उदयपुर से प्राप्त सूचना संदर्भों के आधार पर)

महत्वपूर्ण सूचना-सावधान रहें...

जानकारी मिली है कि एक जालसाज व्यक्ति स्वयं को पूज्य युवाचार्य श्री महेंद्रऋषि जी म. के पास से बताकर लोगों को फोन कर रहा है और किसी जरूरतमंद बीमार सेवक की सहायता के नाम पर 10,000 ट्रांसफर करने की बात कर रहा है। यह पूरी तरह से फ्रॉड है।

संभावना है कि इस व्यक्ति ने चातुर्मास सूची से श्रीसंघ के पदाधिकारियों के मोबाइल नंबर प्राप्त किए हैं और उसी आधार पर लोगों को कॉल कर रहा है। उसने मोबाइल नंबर 92654 41623 से कॉल किया था, लेकिन वह अन्य नंबरों से भी संपर्क कर सकता है। यह व्यक्ति पहले पैसे भेजने की बात करता है और बाद में पैसे वापस करने के बहाने बैंक अकाउंट की जानकारी मांगता है, जिससे साइबर फ्रॉड किया जा सकता है। सभी से निवेदन है कि ऐसे किसी भी कॉल या संदेश पर विश्वास न करें और अपनी बैंक या व्यक्तिगत जानकारी किसी से साझा न करें।

निवेदक : कंवरलालजी सूर्या (संयोजक) श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ-भोपालगंज, भीलवाड़ा

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES POLUR
vamalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION POLUR TIRUVANAMALAI VILLUPURAM
JAIN PETRO Reliance Petroleum Retail Outlet, Diversion Road, Polur 606 803
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 24

Nervous System और Fight-or-Flight प्रतिक्रिया

(गहन विस्तार)

प्रमाद केवल दार्शनिक या आध्यात्मिक विषय नहीं है। उसकी जड़ें हमारे तंत्रिका तंत्र (Nervous System) में भी गहराई से जुड़ी हुई हैं। जब तक हम यह न समझें कि शरीर कैसे प्रतिक्रिया करता है, तब तक सजगता अधूरी रहेगी। मन कहता है-"मुझे खतरा है।" शरीर तुरंत तैयार हो जाता है। यही Fight-or-Flight प्रतिक्रिया है।

1. तंत्रिका तंत्र का मूल कार्य : हमारे Nervous System का मुख्य उद्देश्य है-जीवित रहना। जब भी कोई खतरा महसूस होता है, चाहे वास्तविक हो या कल्पित, शरीर तुरंत सतर्क हो जाता है। हृदय तेज। श्वास उथली। मांसपेशियाँ सख्त। रक्तचाप बढ़ा हुआ। यह तंत्र हमें बचाने के लिए बना है।

2. वास्तविक खतरा बनाम मानसिक खतरा : जंगल में शेर दिखे तो पिहीज-वत-सिपहीज उचित है। परंतु यदि कोई आपकी आलोचना करे और शरीर वही प्रतिक्रिया देकृ तो यह मानसिक खतरे की जैविक प्रतिक्रिया है। समस्या यहाँ से शुरू होती है। मन हर असहमति को खतरे की तरह ले सकता है।

3. Chronic Activation : यदि Fight-or-Flight तंत्र बार-बार सक्रिय हो, और शरीर विश्राम अवस्था में न लौट पाए, तो Chronic Stress उत्पन्न होता है। यह दीर्घकालीन सक्रियता - नसों का कसाव, सूक्ष्म सूजन, थकान, नींद की समस्या - चिड़चिड़ापन का कारण बन सकती है।

4. Sympathetic और Parasympathetic संतुलन : तंत्रिका तंत्र के दो प्रमुख भाग हैं-Sympathetic : सक्रियता, सतर्कता। Parasympathetic : विश्राम, पुनर्स्थापन। जब जीवन में संतुलन होता है, तो दोनों के बीच लय बनी रहती है। परंतु जब व्यक्ति लगातार नियंत्रण, भय और परिणाम-आसक्ति में रहता है, तो Sympathetic तंत्र अधिक सक्रिय हो जाता है। यही प्रमाद का जैविक रूप है।

5. शरीर को सुरक्षा का संकेत : शरीर को शब्दों से नहीं, अनुभव से संकेत मिलता है। यदि श्वास धीमी और गहरी हो, यदि पेट तक श्वास पहुँचे, यदि शरीर ढीला हो, तो Parasympathetic सक्रिय होता है। शरीर को संदेश मिलता है-"अब खतरा नहीं है।"

6. सजगता का न्यूरोलॉजिकल प्रभाव : जब व्यक्ति प्रतिक्रिया को देखता है, तो Prefrontal Cortex सक्रिय होता है जो निर्णय और संतुलन से जुड़ा है। सजगता Limbic System की तीव्र प्रतिक्रिया को नरम कर सकती है। इसका अर्थ है-देखना ही जैविक संतुलन ला सकता है।

7. Freeze प्रतिक्रिया : कभी Fight-or-Flight नहीं, बल्कि freeze प्रतिक्रिया होती है। व्यक्ति सुन्न हो जाता है। निर्णय नहीं ले पाता। भीतर जड़ता अनुभव करता है। यह भी Nervous System की रक्षा है। यदि इसे समझा न जाए, तो व्यक्ति स्वयं को दोष देता है।

8. अभ्यास से संतुलन : तंत्रिका तंत्र का पुनर्संतुलन संभव है। नियमित गहरी श्वास धीमी चाल ध्यानपूर्वक चलना शरीर-जागरूकता करुणा-भाव ये सब Parasympathetic तंत्र को मजबूत करते हैं।

9. दोष नहीं, समझ : यदि आपका शरीर जल्दी तनाव में आ जाता है, तो स्वयं को दोष न दें। शायद वह लंबे समय से सतर्क रहा है। शायद उसने सुरक्षा के लिए कठोरता सीखी है। समझ ही उपचार की शुरुआत है।

10. अंतिम स्पष्टता : Fight-or-Flight तंत्र शत्रु नहीं है। वह रक्षक है। पर जब वह हर समय सक्रिय रहे, तो प्रमाद स्थायी हो जाता है। जब सजगता, श्वास और स्वीकृति तंत्रिका तंत्र को विश्राम देती हैं, तो शरीर संतुलन में लौटता है। अगले अध्याय में हम देखेंगे-ऊर्जा का सिर में अटक जाना कैसे असंतुलन को और गहरा करता है।

(क्रमशः)

जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला...

जैन दर्शन के वैश्विक अध्येता : प्रो. शेल्डन पोलॉक और भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्पाठ

- प्रोफेसर डॉ. आंचल जैन

सन् 1948 में संयुक्त राज्य अमेरिका में जन्मे प्रो. शेल्डन पोलॉक आधुनिक युग के उन अग्रणी पाश्चात्य विद्वानों में गिने जाते हैं जिन्होंने भारतीय ज्ञान-परंपरा, संस्कृत साहित्य, भाषिक इतिहास तथा दक्षिण एशियाई सांस्कृतिक विमर्श को वैश्विक अकादमिक जगत में नई दृष्टि प्रदान की। उन्होंने पश्चिमी अकादमिक जगत में भारतीय भाषिक परंपराओं, दार्शनिक विमर्शों और शास्त्रीय साहित्य की पुनर्समीक्षा करते हुए यह स्थापित किया कि भारत की सांस्कृतिक चेतना केवल धार्मिक आख्यानों तक सीमित नहीं, बल्कि वह बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक और बौद्धिक संवादों से निर्मित एक विराट सभ्यता-बोध है।

यद्यपि पोलॉक का अध्ययन-क्षेत्र व्यापक भारतीय बौद्धिक इतिहास रहा, तथापि जैन धर्म, जैन साहित्य और जैन विद्वत्ता के संबंध में उनके निष्कर्ष विशेष महत्त्व रखते हैं। Harvard University से संस्कृत एवं भारतीय अध्ययन में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले पोलॉक ने यह प्रतिपादित किया कि भारतीय शास्त्रीय परंपराओं के निर्माण और संरक्षण में जैन आचार्यों, कवियों और मनीषियों की भूमिका अत्यंत केंद्रीय रही है।

संस्कृत जगत में जैन विद्वत्ता की प्रतिष्ठा : पोलॉक की चर्चित अवधारणा Sanskrit Cosmopolis भारतीय इतिहास की उस सांस्कृतिक संरचना को समझने का प्रयास है, जिसमें संस्कृत केवल एक धार्मिक भाषा न होकर राजनैतिक, साहित्यिक और दार्शनिक संवाद की सार्वभौमिक अभिव्यक्ति बन गई थी। इस विमर्श में उन्होंने जैन परंपरा को विशेष स्थान प्रदान किया। उनके अनुसार जैन आचार्यों ने संस्कृत को केवल ग्रहण ही नहीं किया, बल्कि उसे नवीन वैचारिक और साहित्यिक ऊँचाइयाँ भी प्रदान की। जैन कवियों द्वारा रचित महाकाव्य, नीतिग्रंथ, चरित साहित्य और तर्कप्रधान दार्शनिक ग्रंथ भारतीय बौद्धिक इतिहास की अमूल्य धरोहर हैं।

पोलॉक ने यह इंगित किया कि जैन मनीषियों ने प्राकृत, अपभ्रंश और संस्कृत-तीनों भाषिक धाराओं को परस्पर जोड़ते हुए भारतीय साहित्यिक संस्कृति को बहुस्तरीय स्वरूप प्रदान किया। इस प्रकार जैन परंपरा भारतीय भाषिक इतिहास में एक सेतु-संस्कृति के रूप में उभरती है।

जैन साहित्य - धर्म से आगे सांस्कृतिक इतिहास का स्रोत : प्रो. पोलॉक की विशेषता यह रही कि उन्होंने जैन साहित्य को केवल धार्मिक आख्यानों का संग्रह न मानकर सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक इतिहास के स्रोत के रूप में भी देखा। उनके अध्ययन में जैन ग्रंथ भारतीय नगर-सभ्यता, व्यापारिक समुदायों, राजसत्ता, भाषिक परिवर्तन और सांस्कृतिक गतिशीलता को समझने के महत्वपूर्ण माध्यम बनते हैं।

उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि मध्यकालीन भारत में जैन विद्वान केवल मठों और उपाश्रयों तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे ज्ञान-परंपरा के सक्रिय संवाहक थे, जिन्होंने विभिन्न राजदरबारों, साहित्यिक मंडलों और शिक्षण परंपराओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वैश्विक मंच पर जैन कृतियों का पुनर्प्रस्तुतीकरण : Murty Classical Library of India के संस्थापक संपादकों में सम्मिलित रहते हुए पोलॉक ने भारतीय शास्त्रीय साहित्य को वैश्विक पाठक-वर्ग तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इस परियोजना के अंतर्गत जैन साहित्य की अनेक दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण कृतियों को आधुनिक भाषिक रूपांतरण और आलोचनात्मक संपादन के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान प्राप्त हुई।

यह प्रयास केवल अनुवाद-कार्य नहीं था, बल्कि भारतीय ज्ञान-परंपरा को विश्व बौद्धिक विमर्श में पुनर्स्थापित करने का सांस्कृतिक अभियान था।

भारतीय परंपरा के प्रति संवेदनशील दृष्टि : पोलॉक का अध्ययन भारतीय परंपरा के प्रति औपनिवेशिक दृष्टिकोण से भिन्न दिखाई देता है। उन्होंने अनेक अवसरों पर स्वीकार किया कि भारत की पारंपरिक पांडित्य-परंपरा आज भी जीवित है और आधुनिक अकादमिक जगत को उससे संवाद स्थापित करना चाहिए।

भारत यात्राओं के दौरान उन्होंने जैन भंडारों, प्राचीन हस्तलिपियों और परंपरागत विद्वानों के कार्यों में विशेष रुचि दिखाई। वे इस तथ्य को रेखांकित करते रहे कि भारतीय समाज यदि अपनी शास्त्रीय भाषाओं और पांडुलिपि-परंपरा से विमुख हो गया, तो वह अपनी ऐतिहासिक स्मृति का एक महत्वपूर्ण भाग खो देगा।

कर्नाटक और जैन साहित्यिक चेतना : कन्नड़ जैन साहित्य के प्रति भी पोलॉक की विशेष अभिरुचि रही। उन्होंने दक्षिण भारत की जैन साहित्यिक परंपराओं को भारतीय "कॉस्मोपोलिटन" संस्कृति का अभिन्न अंग माना। कर्नाटक के जैन कवियों और दार्शनिकों की रचनाओं में उन्हें क्षेत्रीयता और वैश्विकता का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

वरिष्ठ कन्नड़ विद्वान Hampa Nagarajaiah सहित अनेक भारतीय शोधकर्ताओं के साथ उनके अकादमिक संवाद इस बात का प्रमाण हैं कि भारतीय और पाश्चात्य विद्वत्ता के बीच स्वस्थ विमर्श की परंपरा आज भी जीवित है।

प्रो. शेल्डन पोलॉक उन विदेशी विद्वानों में हैं जिन्होंने भारतीय ज्ञान-परंपरा को केवल अध्ययन की वस्तु न मानकर एक जीवंत सभ्यतागत चेतना के रूप में समझने का प्रयास किया। जैन दर्शन, जैन साहित्य और भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के संबंध में उनके अध्ययन यह प्रमाणित करते हैं कि जैन परंपरा भारतीय बौद्धिक विकास की मूलधारा में सदैव सक्रिय रही है।

आज जब विश्व स्तर पर भारतीय ज्ञान-परंपरा के पुनर्मूल्यांकन की प्रक्रिया चल रही है, तब पोलॉक जैसे विद्वानों के अध्ययन जैन साहित्य और दर्शन की वैश्विक प्रासंगिकता को नए आयाम प्रदान करते हैं।

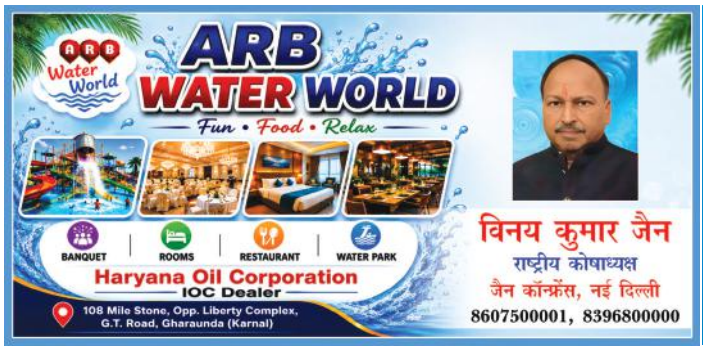

कविता का कोना

युद्धो के उन्मादी युग में...

चातुर्मास को प्रक्षालन का पर्व मान अपनाएं।
डगमग होती नाव ध्यान से खुद ही पार लगाएं।।
भावांतर-विषयांतर करके, स्वयं चेतनामय हो।
पाप प्रणासन हेतु सज्ज हो, मुक्तमना निर्भय हो।।
गुरु चरणों की सन्निधि पाकर त्याग की महिमा जाने।
सामायिक में साधुवत हो, बैठे एक ठिकाने।।
'स्व' के समीप लाएं खुद को, छोड़ बाहरी झंझट।
विषय विकार वृत्ति को त्यागें, लाभ लोभ की खटपट।।
आत्म रंग का ये रंगोत्सव, तन-मन को रंग जाएं।
ऐसा जतन करें कि जीवन, अभंग धुन को गाएं।।
जीतना है खुद को बन जैन, साधक वीर बने जी।
युद्धों के उन्मादी युग में, हम तो धीर बने जी।।

– हुकमचंद जैन 'मेघ', दिल्ली

मुँहपत्ती : पाँच चतुर्ष्पदियाँ

मुँहपत्ती है श्वेत रंग का, छोटे-से कपड़े का टुकड़ा।
इसको धारण करता उसका, घटता असंयम का दुखड़ा।
अहिंसा की श्रेष्ठ प्रतीक, आगमिक विधान है।
जैन धर्म और जैन मुनि की, मुँहपत्ती पहचान है।
वाणी-संयम सिखलाती है, मौन की महिमा बतलाती है।
मुँहपत्ती का गौरव देखो, 'ऋषि-ध्वजा' कहलाती है।
सामायिक की याद दिलाती, स्वाध्याय में यतना लाती।
संतों की सेवा-भक्ति का, मुँहपत्ती संज्ञान कराती।
जब आई कोविड महामारी, मास्क लगाना हुआ जरूरी।
तब पूरी दुनिया ने समझी, मुँहपत्ती की महिमा न्यारी।

– डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई

पाठक समीक्षा

अध्यात्म का आलोक : जैन प्रकाश

जो विराटता लिये हुए है, सबको समाहित किये हुए है,
जिसमें बावीस टोला! श्रमण संघ अनमोला!!
श्रमण संघ की मातृ संस्था, जैन कॉन्फ्रेंस सवायी!
श्रमण संघ की मुख पत्रिका, जैन प्रकाश जग छायी!!
सामग्री संग्रह ऐसा कि, मानो मोती तोला!
श्रमण संघ अनमोला !!
जैन प्रकाश नाम है जैसा, जैन धर्म की झांकी!
अतुल-अमित भावों में बसती, ललित लेखन परिपाटी!!
सेवा संस्कारों का उजाला, बच्चा-बच्चा बोला !
श्रमण संघ अनमोला!!

– कवि ओम समदर्शी, कुरड़ायाँ-उदयपुर (राजस्थान)

स्थानकवासी जैन परंपरा के दुर्लभ दस्तावेज श्रृंखला...

जैन दर्शन में षट् लेश्याओं का अनुपम चित्रण : पांडुलिपि चित्रकला का दार्शनिक वैभव

– मोनिका जैन 'दीदी' एम.ए.

प्रस्तुत चित्र जैन पांडुलिपि-चित्रकला का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उदाहरण है, जो वर्तमान में उत्तर प्रदेश के बागपत जनपद स्थित बड़ौत के शहजाद राय शोध संस्थान में सुरक्षित एवं संग्रहीत है। यह संस्थान भारतीय सांस्कृतिक धरोहर, दुर्लभ पांडुलिपियों तथा पुरातात्त्विक विरासत के संरक्षण के लिए विशेष रूप से विख्यात है, जहाँ हजारों बहुमूल्य हस्तलिखित पांडुलिपियाँ एवं प्राचीन कलात्मक धरोहरें संरक्षित हैं।

इस चित्र में जैन दर्शन में वर्णित षट् लेश्याओं (छह मानसिक रंगों) का अत्यंत प्रतीकात्मक एवं शिक्षाप्रद निरूपण किया गया है। एक फलयुक्त वृक्ष के समक्ष छह व्यक्तियों को विभिन्न स्तरों पर फल प्राप्त करने की भिन्न-भिन्न मानसिक प्रवृत्तियों के साथ चित्रित किया गया है। यही प्रवृत्तियाँ क्रमशः कृष्ण (काला), नील (नीला), कपोत (धूसर), पीत (पीला), पद्म (लाल) तथा शुक्ल (श्वेत) लेश्या का प्रतिनिधित्व करती हैं।

जैन आगमों के अनुसार लेश्या आत्मा की मानसिक एवं भावात्मक अवस्था का प्रतीक है। कृष्ण और नील लेश्या हिंसा, क्रूरता तथा विनाशकारी वृत्ति का द्योतक हैं, जहाँ व्यक्ति वृक्ष को जड़ से उखाड़ देने अथवा तने को काटने जैसी हिंसक भावना रखता है। इसके विपरीत पीत, पद्म और विशेषतः शुक्ल लेश्या में अहिंसा, संयम, करुणा और विवेक का क्रमिक विकास दिखाई देता है। चित्र में शुक्ल लेश्या वाला व्यक्ति केवल भूमि पर गिरे हुए फलों को ग्रहण करता हुआ प्रदर्शित है, जो जैन धर्म के अहिंसा, अपरिग्रह और संवेदनशील जीवन-दर्शन का सर्वोच्च प्रतीक है।

पांडुलिपि विज्ञान (Manuscriptology) की दृष्टि से यह चित्र अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह केवल अलंकरण नहीं, बल्कि-दृश्य-शिक्षा (Visual Pedagogy) का उत्कृष्ट उदाहरण है। प्राचीन जैन पांडुलिपियों में ऐसे चित्रों के माध्यम से गूढ़ दार्शनिक सिद्धांतों को सामान्य पाठकों और श्रावकों के लिए सरल, प्रभावशाली एवं स्मरणीय बनाया जाता था। लाल किनारों, प्राकृतिक एवं खनिज रंगों, समतल शैली, प्रतीकात्मक रंग-योजना तथा संतुलित संरचना में पश्चिम भारतीय जैन लघुचित्र परंपरा की विशिष्ट कलात्मक विशेषताएँ स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती हैं।

इस प्रकार यह चित्र केवल एक कलाकृति नहीं, बल्कि जैन दर्शन, नैतिक मनोविज्ञान, भारतीय चित्रकला और पांडुलिपि-परंपरा का अद्वितीय संगम है।

बड़ौत स्थित शहजाद राय शोध संस्थान में सुरक्षित यह दुर्लभ चित्र भारतीय ज्ञान-परंपरा की उस समृद्ध विरासत का सशक्त प्रमाण है, जिसमें दर्शन, कला और लोकशिक्षा का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय') पर भोजन आधा ही दीजिए", तब भी प्रायः यह सुविधा नहीं मिलती। परिणामस्वरूप बड़ी मात्रा में भोजन व्यर्थ चला जाता है। यह व्यवस्था बदलनी चाहिए। प्रत्येक भोजनालय में 'हाफ पोर्शन' की व्यवस्था सामाजिक उत्तरदायित्व के रूप में लागू होनी चाहिए।

सबसे अधिक चिंता विवाह एवं सामाजिक आयोजनों की है। आज विवाह समारोह सामाजिक प्रतिष्ठा की प्रतिस्पर्धा बन गए हैं। जितने अधिक व्यंजन, उतना बड़ा आयोजन-मानो यही सफलता का मापदंड हो। सलाद, चाट, पंजाबी, दक्षिण भारतीय, चाइनीज, इटैलियन, मिठाइयाँ और न जाने कितने प्रकार के स्टॉल। अतिथि आवश्यकता से कई गुना अधिक भोजन अपनी प्लेट में भर लेते हैं। दाल में रायता, सब्जी में पुलाव, मिठाई में चटनी और सलाद में रसगुल्ला-सब एक-दूसरे में घुल-मिल जाते हैं। अंततः प्लेट का बड़ा भाग जूठा होकर कूड़ेदान की भेंट चढ़ जाता है।

विडम्बना यह है कि विवाह के निमंत्रण-पत्र पर लिखा होता है-"वर-वधू को आशीर्वाद देने पधारें", किन्तु अधिकांश लोगों की दौड़ वर-वधू तक नहीं, बल्कि भोजन के स्टॉलों तक होती है। भोजन का स्वाद लेने में कोई बुराई नहीं, परन्तु आवश्यकता से अधिक लेकर उसे व्यर्थ फेंक देना निश्चित ही सामाजिक और नैतिक अपराध है।

वास्तविक प्रश्न यह है कि जिस भोजन को हम सहजता से फेंक देते हैं, क्या हमने कभी उसके पीछे छिपे किसान के श्रम, धरती की उर्वरता, वर्षा की प्रत्येक बूँद और प्रकृति के अमूल्य संसाधनों के बारे में सोचा है? जिस अन्न को हम जूठा छोड़ देते हैं, वही किसी भूखे बच्चे के लिए जीवनदान बन सकता था।

स्पष्ट है कि समस्या अन्न की कमी की नहीं, बल्कि संवेदनाओं की कमी की है। अन्न की बर्बादी और भूख से जूझती मानवता के बीच जो संस्कारों का सेतु कभी भारतीय संस्कृति ने निर्मित किया था, वह धीरे-धीरे टूटता जा रहा है। आवश्यकता है कि इस सेतु का पुनर्निर्माण किया जाए।

भगवान महावीर का दर्शन इस संदर्भ में हमें अत्यंत व्यावहारिक दिशा देता है। अपरिग्रह का अर्थ केवल धन-संपत्ति का सीमित संग्रह नहीं, बल्कि आवश्यकता से अधिक उपभोग का त्याग भी है। संयम केवल वाणी और व्यवहार में नहीं, बल्कि भोजन में भी आवश्यक है। अहिंसा का व्यापक अर्थ यह भी है कि हम प्रकृति के संसाधनों का अनावश्यक अपव्यय न करें। अन्न का प्रत्येक दाना असंख्य जीवों, प्रकृति के उपकार और किसान के कठोर परिश्रम का परिणाम है। इसलिए अन्न का सम्मान करना भी धर्म का एक रूप है।

आज आवश्यकता है कि "अन्न सम्मान अभियान" को राष्ट्रीय जन-आंदोलन बनाया जाए। प्रत्येक परिवार यह संकल्प ले कि थाली में उतना ही भोजन परोसा जाएगा जितना खाया जा सके। विद्यालयों में बच्चों को अन्न के सम्मान का संस्कार दिया जाए। विवाह समारोहों में भोजन की मात्रा पर संयम रखा जाए। होटल और रेस्तराँ आधी मात्रा में भोजन उपलब्ध कराएँ। बचा हुआ स्वच्छ भोजन व्यवस्थित रूप से जरूरतमंद लोगों तक पहुँचाने की व्यवस्था विकसित की जाए।

छत्रपति शिवाजी महाराज के पूज्य गुरु समर्थ रामदास स्वामी ने भोजन के वास्तविक स्वरूप को अत्यंत सरल शब्दों में व्यक्त किया है -

"वदनी कवळ घेता नाम घ्या श्रीहरीचे,
सहज हवन होते नाम घेता फुकाचे।
जीवन करी जीवित्वा अन्न हे पूर्ण ब्रह्म।
उदरभरण नोहे जाणिजे यज्ञकर्म।।"

अर्थात् भोजन केवल पेट भरने का साधन नहीं, बल्कि एक पवित्र यज्ञ है और अन्न स्वयं पूर्ण ब्रह्म है। आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें-थाली में उतना ही लें, जितना सम्मानपूर्वक खा सकें। अन्न का एक भी कण व्यर्थ नहीं जाने देंगे। संयमित उपभोग को जीवन का संस्कार बनाएँगे और "अन्न बचाओ-भूख मिटाओ" को जन-जन का अभियान बनाएँगे। याद रखिए, जिस दिन हम अन्न का सम्मान करना सीख जाएँगे, उसी दिन हम मानवता का भी सम्मान करना सीख जाएँगे। क्योंकि भोजन केवल उदरपूर्ति नहीं, करुणा, कृतज्ञता और संस्कृति का जीवंत प्रतीक है।

ALDACO
AIM HIGH

Sudershan Jain
National Chairman – Jan Kalyan Yojana
Jain Conference, New Delhi

DEALS IN NON LEATHER FOOTWEAR
ALDACO FOOTWEAR
9310899901 | Aldacofootwear@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

चातुर्मास पूर्व आचार्य भगवन के दर्शनार्थ पधारे वरिष्ठ साधु-साध्वीवृंद

सूरत (गुजरात) : दिनांक 18 जून को आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनि जी म. के दर्शनार्थ आत्म भवन, अवध संगरीला में धर्म प्रभावक श्री सौरभ मुनि जी म., श्री विज्ञान मुनि जी म. एवं साध्वी श्री दक्षिताजी म., साध्वी डॉ. उदिताजी म. आदि ठाणा पधारे। आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म. ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि जो साधु-साध्वी बने हैं, जिस उद्देश्य से अर्थात् आत्मा की साधना के लिए दीक्षा ली है उसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए निरंतर ध्यान साधना में आगे बढ़ते रहें।

आचार्य भगवन के दर्शन एवं मंगल मिलन हेतु गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय धर्मधुरंधर सूरीवरजी म. आदि ठाणा-7 पधारे उनके साथ मुनि ऋषभचन्द्र विजयजी, मुनि धर्मकीर्तिविजय जी, मुनि धर्मबोधि विजय जी, मुनि महाभद्रविजय जी, मुनि तत्त्वदर्शन विजय जी, मुनि अक्षयरत्न विजय जी पधारे। उनके साथ जैन संवत्सरी एकता पर विशेष चर्चा हुई। इस अवसर पर आचार्य भगवन ने उन्हें साहित्य भेंट किया व श्रीमद् धर्मधुरंधर सूरीश्वरजी म. ने भी आचार्य भगवन को नवयुग निर्माता का सत्य दर्शन साहित्य समर्पित किया।

विहार सेवा में आए लगभग 100 से अधिक व्यक्तियों के नवकारसी की व्यवस्था शिवाचार्य आत्म - ध्यान फाउण्डेशन द्वारा संचालित भोजनशाला में की गई।

दिनांक 23 जुलाई 2026 को आचार्य भगवन् का चातुर्मासिक प्रवेश होना संभावित है, 29 जुलाई 2026 से चातुर्मास प्रारंभ हो जाएगा। चातुर्मास प्रवेश के साथ ही चातुर्मासिक धार्मिक आयोजन प्रारंभ हो जाएंगे। प्रेषक : रोहित बोकडिया जैन

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन महासंघ बैंगलोर द्वारा सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव

बैंगलोर (कर्नाटक) : धार्मिक आयोजन के गौतम प्रसादी में आईटम को ग्यारह तक सीमित रखे जाएँ, कच्ची सलाद व आइसक्रीम न रखे जाएँ। चातुर्मास प्रवेश की उच्च और शोभायात्रा हेतु प्रवेश जुलूस में डी.जे., म्यूजिकल सिस्टम एवं बैंड-बाजों का उपयोग नहीं करें। प्रवचन में समय की पाबंदी का अनुशासन रहे, ज्ञानार्जन पर विशेष जोर रहे तथा प्रतिक्रमण सीखने वालों का खूब और सार्वजनिक सम्मान कर प्रोत्साहित करें। आगम का जुलूस न निकालें जाएँ। स्वागत सत्कार शब्दों से ही श्रेष्ठ होते हैं। आवश्यकता हो तो शॉल-माला मात्र बाहर गांव से पधारे गणमान्य अतिथियों के लिये ही आरक्षित रखें। (तपस्या के सम्मान के लिये छूट रहे), प्रत्येक संघ अनावश्यक खर्च से बचें। युवा पीढ़ी के लिए प्रोत्साहन के आयोजन हों।

प्रेषक : किशोर दलाल जैन

मंदसौर में जैन दिवाकर रत्न सम्मान से विभूषित हुए समाज के प्रेरणापुंज वरिष्ठ श्रावकगण

मंदसौर (मध्य प्रदेश) : अखिल भारतीय श्री जैन दिवाकर संगठन समिति (रजि.) के प्रकल्प अनुसार समाज में धर्म, संस्कार, सेवा एवं मानवता के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले वरिष्ठ एवं श्रद्धेय श्रावकों का 'जैन दिवाकर रत्न सम्मान' के अंतर्गत सम्मानपूर्वक अभिनंदन किया गया।

इस सम्मान श्रृंखला के अंतर्गत श्रद्धेय श्री आनंदीलाल दुगड़, श्री जवाहरलाल जैन, श्री भंवरलाल पामेचा जैन, श्री ऋषभ कुमार मारू जैन, श्री शांतीलाल संचेती जैन, श्री हीरालाल पामेचा जैन एवं श्री चांदमल जैन को उनके निवास स्थान पर जाकर सम्मानित किया गया। विशेष रूप से, परम श्रद्धेय स्व. श्री सागरमल संचेती जैन, जिनका अप्रैल माह में देवलोकगमन हो गया था, के स्मरण में संगठन समिति के पदाधिकारी उनके निवास स्थान पर पहुंचे एवं श्रद्धासुमन अर्पित कर भावभीनी शोक संवेदना व्यक्त की। इस अवसर पर संगठन समिति के राष्ट्रीय संरक्षक श्री अशोक मारू, राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य श्री नरेंद्र मारू सहित संगठन समिति के अन्य पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित रहे। प्रेषक : अशोक मारू जैन

समाजसेवी रोशनलाल पगारिया को वर्ष 2026 का राजस्थान सरकार द्वारा राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान

मुंबई (महाराष्ट्र) : शिक्षा के क्षेत्र में समाजसेवा और जनहितकारी योगदान की एक प्रेरणादायक मिसाल को राजस्थान सरकार ने सम्मानित करने का निर्णय लिया। मुंबई निवासी जैन कॉन्फ्रेंस के वरिष्ठ सदस्य समाजसेवी रोशनलाल पगारिया जैन को वर्ष 2026 के 30वें राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह में सम्मानित किये जाने का निर्णय लिया गया। शिक्षा के विकास और विद्यालयी आधारभूत संरचना को सुदृढ़ बनाने में उनके उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए यह प्रतिष्ठित सम्मान प्रदान किया जा रहा है। प्रारंभिक शिक्षा विभाग के निदेशक सीताराम जाट (आई.ए.एस.) के अनुसार रोशनलाल पगारिया जैन का चयन शिक्षा क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट सहयोग तथा रेलमगरा विद्यालय के विकास में निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका के आधार पर किया गया है। उन्होंने विद्यालय के भौतिक विकास, भवन निर्माण, अतिरिक्त निर्माण कार्यों तथा विभिन्न आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। उनके सहयोग से विद्यालय की शैक्षणिक एवं आधारभूत सुविधाओं को मजबूती मिली है, जिससे शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण सहायता प्राप्त हुई है।

सात्विक जैन की टीम ने स्वर्ण पदक हासिल किया

बनूड (पंजाब) : एस.एस. जैन सभा बनूड (पंजाब) के पूर्व प्रधान श्री महेंद्र कुमार जैन के पौत्र और श्री सुनील जैन, अधिवक्ता (Advocate) पंजाब हरियाणा उच्च न्यायालय के सुपुत्र श्री सात्विक जैन की टीम ने लड़कों के U-15 Ice Hockey के National Level के Championship मुकाबले में स्वर्ण पदक हासिल किया। श्री सात्विक जैन, श्री जैनेंद्र गुरुकुल पंचकुला के पूर्व महासचिव श्री पुनीत जैन के भतीजे हैं। श्री सात्विक जैन इस मुकाबले में चंडीगढ़ की तरफ से खेले। यह मुकाबला 16 जून 2026 को देहरादून में आयोजित किया गया। इस उपलब्धि के लिए हम सकल जैन समाज की ओर से श्री सात्विक जैन, उसकी पूरी टीम और श्री महेंद्र कुमार जैन, श्री सुनील जैन व उनके पूरे परिवार को बहुत-बहुत बधाई प्रदान करते हैं।

सुश्री स्वास्तिका जैन की टीम ने Ice Hockey के National Level के Championship मुकाबले में स्वर्ण पदक हासिल किया

हरियाणा : एस.एस. जैन महासभा हरियाणा के पूर्व प्रधान श्री साधुराम जैन की पौत्री सुश्री स्वास्तिका जैन की टीम ने Girls के U-15 लड़कियों के Ice Hockey के National Level के Championship मुकाबले में स्वर्ण पदक हासिल किया है। यह मुकाबला 16 जून को देहरादून के Himadari Ice Rink में आयोजित किया गया। इस उपलब्धि के लिए जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से सुश्री स्वास्तिका जैन, उनकी पूरी टीम और श्री साधुराम जैन व उनके पूरे परिवार को बहुत-बहुत बधाई देते हैं।

प्रेषक : जे.पी. जैन
(संरक्षक-एस.एस. जैन महासभा हरियाणा)

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste

Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

अहिंसा विहार रोहिणी में गुरुदेव श्री राममुनि जी का 26वाँ पुण्यस्मृति दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया

दिल्ली : अहिंसा विहार जैन स्थानक, रोहिणी में जिनशासन गौरव पूज्य गुरुदेव श्री राममुनि जी महाराज का 26वाँ पुण्यस्मृति दिवस मधुर वक्ता श्री रचित मुनि जी महाराज आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में चतुर्विध संघ की गरिमामयी उपस्थिति में भव्य रूप से मनाया गया। इस अवसर पर सामूहिक जाप का आयोजन किया गया। पूज्य श्री रचित मुनि जी महाराज ने अपने प्रेरणादायी प्रवचन में गुरुदेव श्री राममुनि जी महाराज के त्याग, तप एवं साधनामय जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम में जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश के महामंत्री श्री ललित ओसवाल जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जैन, राष्ट्रीय युवा महामंत्री श्री अमित जैन लोढ़ा जैन, राष्ट्रीय युवा कानून मंत्री श्री विशाल छल्लानी, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री करतार सिंह जैन, श्री दिलबाग राय जैन, श्री ऋषि जैन, श्री सुभाष पारख जैन, श्री विकास जैन सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम श्रद्धा, भक्ति एवं गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता भाव के साथ संपन्न हुआ। प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

महिला जगत

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का भव्य आयोजन

लुधियाना (पंजाब) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से लुधियाना स्थित नवकार फॉर्म्स में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस बड़े उत्साह, उमंग एवं आध्यात्मिक वातावरण में मनाया गया।

कार्यक्रम में अंजू जैन एवं पूनम जैन ने विभिन्न योगासन, प्राणायाम एवं ध्यान का अभ्यास करवाया तथा योग के महत्व पर प्रकाश डाला। ध्यान सत्र के माध्यम से सभी ने मानसिक शांति, सकारात्मक ऊर्जा एवं आत्मिक आनंद का अनुभव किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय महिला महामंत्री श्रीमती रीचा संदीप जैन ने योग के महत्व पर अपने प्रेरणादायी विचार व्यक्त किए तथा उन्होंने सभी को प्रतिदिन कुछ समय योग और ध्यान के लिए निकालने तथा इसे अपनी दिनचर्या का अभिन्न अंग बनाने का संदेश दिया। नवकार फॉर्म्स के शांत एवं मनोहारी वातावरण में आयोजित यह कार्यक्रम अत्यंत प्रेरणादायक एवं सफल रहा। कार्यक्रम के उपरांत सभी उपस्थित सदस्यों ने आपसी सौहार्द के साथ जलपान ग्रहण किया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय महिला महामंत्री श्रीमती रीचा संदीप जैन, राष्ट्रीय मंत्री मोना जैन, राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री सोनिया जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य निधि जैन एवं उपमा जैन, पंजाब जोन-2 महिला शाखा अध्यक्षा पूनम जैन, काजल जैन, रेखा जैन, स्वीटी जैन तथा महिला शाखा की समस्त कार्यकारिणी सदस्याएँ उपस्थित रहीं।

प्रेषक : रीचा संदीप जैन

राजस्थान प्रांतीय महिला शाखा द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ऑनलाइन योग सत्र का आयोजन

उदयपुर (राजस्थान) : अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांतीय महिला शाखा द्वारा ऑनलाइन योग सत्र का सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रदेश की सभी महिला सदस्यओं ने अपने-अपने घरों से ऑनलाइन जुड़कर योगाभ्यास किया। योग के महत्व को समझते हुए सभी सदस्यों ने नियमित रूप से योग को अपने जीवन का हिस्सा बनाने एवं स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का संकल्प लिया। प्रांतीय महिला अध्यक्षा डॉ. पुष्पा खोखावत जैन एवं प्रांतीय महिला महामंत्री डॉ. शिल्पा नाहर जैन ने सभी सहभागियों को योग के माध्यम से शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने का संदेश दिया।

प्रेषक : पुष्पा खोखावत जैन

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

सुश्रावक श्री भूरेलाल जैन का स्वर्गवास

स्थानकवासी जैन परिवार द्वारा देहदान का अनुकरणीय प्रेरणादायक कार्य

दिल्ली : सुश्रावक श्री भूरेलाल जैन 'गंधी' सुपुत्र स्व. श्री शास्त्री मोहनलाल जैन 'गंधी' का दिनांक 24 जून को स्वर्गवास हो गया। उनके स्वर्गवास के पश्चात स्थानकवासी जैन परिवार द्वारा देहदान का अनुकरणीय प्रेरणादायक कार्य किया गया। हम सभी उनके इस महान कार्य हेतु हार्दिक अनुमोदना प्रकट करते हैं।

सुश्रावक रत्न श्री शांतिलाल नाहर जैन का चौविहार संथारे सहित देवलोक गमन

अहमदाबाद (गुजरात) : सुश्रावक रत्न श्री शांतिलाल नाहर जैन का चौविहार संथारे सहित देवलोक गमन हो गया। आपने गुजरात में जैन कॉन्फ्रेंस को गांव-गांव व शहर-शहर में बढ़ावा देने का कार्य किया तथा स्वास्थ लाभ लेने के लिए अहमदाबाद पधारने वाले गुरु भगवंतों व महासाध्वीजी के लिए आप व आपका पूरा नाहर परिवार सदा ही अग्रणी रहता था। आपके संथारा सहित देवलोक गमन पर वंदन, नमन। प्रेषक : शंभु ललवानी जैन

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

संयम-साधना दिवस के रूप में मनाई उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी म. की दीक्षा जयंति

सिकन्दराबाद (हैदराबाद) : 24 जून को श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ मारुति विधि के तत्वावधान में प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री रूपचंदजी म. के शिष्य, युवा तपस्वी श्री मुकेश मुनिजी म., सेवारत्न श्री हरीशमुनिजी म., प्रज्ञारत्न श्री हितेशमुनिजी म., प्रार्थनार्थी श्री सचिनमुनिजी म. आदि ठाणा के सान्निध्य में बुधवार को साधना के शिखर पुरुष उपाध्याय प्रवर श्री पुष्करमुनिजी म. की 102वीं दीक्षा जयंति संयम - साधना दिवस के रूप में श्रद्धा एवं आस्था के साथ मनाई गई। इस अवसर पर मुनिवृन्द की प्रेरणा से बड़ी संख्या में श्रावक - श्राविकाओं ने दो - दो सामायिक की साधना भी की।

धर्मसभा में प्रार्थनार्थी सचिन मुनिजी म. का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ। धर्मसभा में श्रीसंघ के संघपति संपतराजजी कोठारी, अध्यक्ष शांतिलालजी बोहरा, श्रीसंघ खैरताबाद के चेयरमैन नवरतनमलजी गुन्देचा, श्रीसंघ कृष्णानगर के महामंत्री विमलचंदजी पितलिया ने भी गुणानुवाद करते हुए पूज्य पुष्करमुनिजी म. सा. के प्रति भावांजलि समर्पित की।

प्रेषक : निलेश कांठेड़ जैन

जैन समाज के गौरव आईपीएस आनंद जैन बने लद्दाख के डीजीपी

जैन समाज के लिए गर्व का विषय है कि वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी आनंद जैन को भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा लद्दाख का पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) नियुक्त किया गया है।

आनंद जैन ने कठिन परिश्रम और लगन के बल पर संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) की सिविल सेवा परीक्षा में अखिल भारतीय 89वीं रैंक प्राप्त कर भारतीय पुलिस सेवा (IPS) में प्रवेश किया था। अपने लंबे सेवा काल में उन्होंने श्रीनगर सहित जम्मू-कश्मीर के अनेक संवेदनशील क्षेत्रों में महत्वपूर्ण दायित्व निभाए हैं। वे श्रीनगर के पुलिस अधीक्षक (एसपी) तथा अन्य वरिष्ठ पदों पर रहते हुए कानून-व्यवस्था, सुरक्षा प्रबंधन और जनसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर चुके हैं।

लद्दाख जैसे सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्रशासित प्रदेश का डीजीपी नियुक्त किया जाना उनकी उत्कृष्ट प्रशासनिक क्षमता, नेतृत्व कौशल और निष्पक्ष कार्यशैली का सम्मान है। उल्लेखनीय है कि श्री आनंद जैन रोहिणी दिल्ली निवासी तपस्वी श्री बद्री प्रसाद जी महाराज के पारिवारिक सुश्रावक ला. उत्फतराय जैन के दामाद तथा स्थानकवासी जैन समाज के गौरव श्री ऋषि जैन आईआरएस के बहनोई हैं। स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारी मंडल ने उनकी इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त करते हुए इसे पूरे समाज के लिए गौरव का क्षण बताया है तथा उनके सफल एवं उज्ज्वल कार्यकाल के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की हैं। - सम्पादकीय टीम

J. P. Jain Foundation

(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)

सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

चेयरमैन अभय जैन | महामंत्री अतुल जैन | कोषाध्यक्ष अमित जैन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 01-07-2026
Date of Posting : 07/08-07-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ❊ अंक : 17 ❊ पृष्ठ : 8
माह : जुलाई ❊ सप्ताह : 01 जुलाई से 07 जुलाई

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुग्गड़ जैन-चेन्नई

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली महापुरुष श्रृंखला...

दानवीर सेठ श्री भैरोंदानजी सेठिया, बीकानेर : धर्म, ज्ञान और दान के त्रिवेणी पुरुष

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

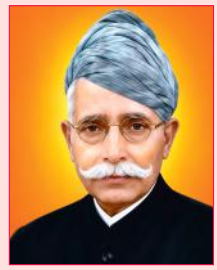

स्थानकवासी जैन समाज के इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे हुए हैं जिन्होंने अपने धन को केवल वैभव का साधन न मानकर धर्म, शिक्षा और समाज की सेवा का माध्यम बनाया। ऐसे ही युगपुरुषों में दानवीर सेठ श्री भैरोंदानजी सेठिया-बीकानेर का नाम अत्यंत श्रद्धा और सम्मान से लिया जाता है। वे साधुमार्गी स्थानकवासी जैन परम्परा के महान उपासक, पूज्य आचार्य श्री जवाहरलालजी महाराज के परम श्रद्धालु श्रावक तथा स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं आधार-स्तंभों में से एक थे। उनका सम्पूर्ण जीवन जैन धर्म, आगम - साहित्य, शिक्षा और समाज - सेवा के लिए समर्पित रहा।

संवत् 1923 (ई. 1866) आश्विन शुक्ल अष्टमी को बीकानेर राज्य के कस्तूरिया ग्राम में धर्मचंदजी सेठिया के प्रतिष्ठित परिवार में आपका जन्म हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा सामान्य होने पर भी स्वाध्याय और अनुभव के बल पर आपने हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती तथा मारवाड़ी भाषाओं का उत्कृष्ट ज्ञान अर्जित किया। व्यापार में आपकी असाधारण प्रतिभा के कारण भारत के अनेक प्रमुख नगरों-कानपुर, दिल्ली, अमृतसर, अहमदाबाद, बम्बई, मद्रास, कराची-यहाँ तक कि जापान के ओसाका तक आपकी व्यापारिक शाखाएँ स्थापित हुई। किन्तु सांसारिक सफलता के साथ-साथ आपका मन सदैव धर्म और ज्ञान की साधना में रमा रहा।

जीवन के उत्तरार्ध में संवत् 1967 (ई. 1910) में गंभीर बीमारी के उपरांत आपने अपना अधिकांश समय धर्म, स्वाध्याय और समाजसेवा को समर्पित कर दिया। संवत् 1970 (ई. 1913) में बीकानेर में विद्यालयों की स्थापना, कन्या शिक्षा के प्रोत्साहन तथा सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास में आपका योगदान अत्यंत उल्लेखनीय रहा। आपने यह सिद्ध किया कि सच्चा वैभव समाज के उत्थान में निहित है।

आगम-साहित्य के अनन्य उपासक : सेठ श्री भैरोंदानजी केवल दानी ही नहीं, बल्कि जैन आगम और शास्त्रों के गंभीर अध्येता भी थे। संतों के सान्निध्य में रहकर उन्होंने शास्त्र-श्रवण और स्वाध्याय को अपने जीवन का नियमित अंग बनाया। उनके व्यक्तित्व में धन और धर्म का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। वे मानते थे कि समाज की वास्तविक उन्नति ज्ञान के संरक्षण और प्रसार से ही संभव है।

संवत् 1978 (ई. 1921) में बड़े भाई श्री अगरचंदजी के अस्वस्थ होने पर बीकानेर लौटकर संस्थागत कार्यों का दायित्व संभाला तथा उसी वर्ष पुत्रों में संपत्ति का विभाजन कर धर्मार्थ संस्थाओं के लिए स्थायी निधि निर्धारित की। इसी भावना से उन्होंने बीकानेर की सेठिया की पोल में एक समृद्ध जैन आगम पुस्तकालय की स्थापना और विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह पुस्तकालय आज भी सैकड़ों जैन साधु-साध्वियों, शोधकर्ताओं और स्वाध्याय प्रेमियों के लिए ज्ञान का अनुपम केन्द्र बना हुआ है। अनेक आगमिक ग्रंथों, दुर्लभ हस्तलिखित प्रतियों और धार्मिक साहित्य का यह भंडार साधुमार्गी परम्परा की ज्ञान-संपदा का जीवंत प्रतीक है। बीकानेर आने वाले अनेक संत-साध्वियाँ आज भी इसी पुस्तकालय से अध्ययन कर अपने संयम जीवन को समृद्ध बनाते हैं। यह पुस्तकालय वस्तुतः सेठिया जी की दूरदृष्टि और धर्मनिष्ठा का अमर स्मारक है।

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के सशक्त स्तम्भ : सेठ श्री भैरोंदानजी का योगदान केवल स्थानीय स्तर तक सीमित नहीं रहा। वे स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के प्रारम्भिक विकासकाल के प्रमुख प्रेरक, सहयोगी और संरक्षक रहे। संस्था के अधिवेशनों, संगठनात्मक गतिविधियों तथा समाजहित के अनेक कार्यों में उन्होंने तन-मन और धन से सहयोग दिया। बम्बई में सम्पन्न कॉन्फ्रेंस के सातवें अधिवेशन में उन्हें सभापति का दायित्व सौंपा जाना उनके प्रति समाज के गहरे विश्वास का प्रमाण था। उन्होंने संगठन को केवल आर्थिक आधार ही नहीं दिया, बल्कि उसे वैचारिक और नैतिक दिशा भी प्रदान की।

पूज्य आचार्य श्री जवाहरलालजी महाराज के परम भक्त : पूज्य आचार्य श्री जवाहरलालजी महाराज के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा थी। वे आचार्यश्री के धार्मिक, शैक्षणिक और सामाजिक अभियानों में निरन्तर सहयोग देते रहे। स्थानकवासी जैन साधुमार्गी परम्परा के विकास, आगम-संरक्षण, शिक्षा-प्रसार और श्रमण संस्कृति के संवर्धन में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। अनेक धार्मिक योजनाओं के पीछे उनकी प्रेरणा, उदारता और संगठन क्षमता कार्य करती थी।

दान की परिभाषा बदलने वाला व्यक्तित्व : सेठ श्री भैरोंदानजी का दान केवल आर्थिक सहायता तक सीमित नहीं था। उन्होंने शिक्षा, साहित्य, धर्म, पुस्तकालय, विद्यालय, संगठन और समाज के स्थायी विकास को अपना लक्ष्य बनाया। उनका मानना था कि ऐसा दान ही स्थायी होता है जो आने वाली पीढ़ियों को संस्कार और ज्ञान प्रदान करे। उनका सौम्य स्वभाव, सरल व्यवहार, विनम्रता और धार्मिक निष्ठा सभी को प्रभावित करती थी। वे अनेक सार्वजनिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हुए भी सदैव स्वयं को धर्म का सेवक ही मानते रहे।

दानवीर सेठ श्री भैरोंदानजी सेठिया का जीवन इस सत्य का साक्षात् उदाहरण है कि धन की वास्तविक सार्थकता धर्म, ज्ञान और समाज की सेवा में है। उनके द्वारा स्थापित बीकानेर का आगम पुस्तकालय, जिसको की प्रस्तुत लेख के लेखक ने भी स्वयं बीकानेर जाकर वहाँ की ऐतिहासिक सामग्री का अवलोकन किया है, आज भी ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित किए हुए है और स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के इतिहास में उनका नाम एक ऐसे महापुरुष के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा, जिसने अपनी सम्पत्ति को समाज की आध्यात्मिक और शैक्षणिक उन्नति का साधन बनाया। आने वाली पीढ़ियाँ उनके जीवन से प्रेरणा लेकर धर्म, स्वाध्याय, सेवा और संगठन की परम्परा को आगे बढ़ाती रहेंगी-यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

जैन गौरव

अमर शहीद अर्चित वडिया जैन

20 जनवरी 1988 को उदयपुर में जन्में अर्चित वाडिया ने 175 मेड रेजिमेन्ट में लेफ्टिनेंट के रूप में देश सेवा में संलग्न हुए। वे 20 जुलाई 2011 को रात 9 बजे सियाचीन ग्लेशियर में अपने वरिष्ठ साथियों की रक्षा करने हेतु 20 हजार फीट की ऊँचाई से अद्भुत साहस दिखाते हुए बंकर में कूद पड़े जलने एवं दम घुटने के कारण शहीद हो जाने से पूर्व - यह कहकर अंतिम साँस ली-**हर एक को मारना है, लेकिन मेरी मौत सबको याद रहेगी ।**

नासिक एवं कुप्पकलां में आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ का आयोजन

शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन के तत्वावधान में नासिक एवं कुप्पकलां में 18 जून से 27 जून तक आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ का सफल आयोजन किया गया। यह आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ एक दिवसीय, चार दिवसीय एवं दस दिवसीय रूप में सम्पन्न हुआ।

इस आयोजन में नासिक ध्यान केन्द्र पर 62 तथा कुप्पकलां में 47 आत्मार्थी साधकों ने सहभागिता की। इस प्रकार दोनों स्थानों पर कुल 109 आत्मार्थी साधक आत्मकल्याण की साधना से जुड़े। आचार्य भगवन के मंगल आशीर्वाद तथा प्रमुख मंत्री श्री शिरीष मुनि जी म. के मार्गदर्शन में यह आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ निरन्तर संचालित हो रहा है। इस धर्म यज्ञ के माध्यम से अनेक आत्मार्थी साधक आत्मजागरण, आत्मशुद्धि एवं आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। प्रेषक : रोहित बोकडिया जैन

श्रमण संघीय जैन पर्व

दिनांक **09** जुलाई : घोर तपस्वी श्री रोशनलाल जी म. - स्मृति दिवस
दिनांक **14** जुलाई : आचार्य श्री कांशीराम जी म. - जन्म जयंति

लौकिक एवं राष्ट्रीय पर्व

दिनांक **06** जुलाई : वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. कोठारी जन्म दिवस

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ❊ सम्पर्क : 90197 31906